



वागवाणी, नृदध्वविष्णुसदानमस्तु ॥ नृमृगुमाला, वनम
किमाला, उमाप्रियासा, गनूजप्रियचपापालिदेव्या, निव
हाहविष्णु, नृदध्वविष्णुसदानमस्तु ॥ रुस्माङ्गवपी, वन
(मपत्रपी, यस्तुध्वनायस्तुविदावनीच, सदनमस्तुमाला, जसद
मिपूजा, नृदध्वविष्णुसदानमस्तु ॥ मृगस्वनूपी, वनमान

नूपी, विगङ्गा, नृमानवसिंहनूपी, निवसन्नूपी, वनमीननू
पी, नृदध्वविष्णुसदानमस्तु ॥ वृष्णास्वन्नूपी, नृयमिस्वन्नू
पी, वृष्णान्नवचू, दननादचूदि, नृदध्वविष्णुसदानम
स्तु ॥ श्रीवक्त्रधानी, वस्तुधाधिकालि, कंठप्रमाथी, गियूनपु
मः श्री, कामांगनासी, दशग्रीवनासी, नृदध्वविष्णुसदा

नमस्तु ॥ गन्धर्वनागा, ज ॐ ॥ ननागी, ॐ काल नृपी, वनञ
ग नृपी, दिवस्व नृपी, चमा रि नृपी, नृडध्व विष्णु सदा न
मस्तु ॥ ॐ आदिनाथ, वननी ननाथ, ॐ वरु विंका, वननी
न विंका, ॐ विर्वनाथ, वनमी ननाथ, नृडध्व विष्णु सदा
नमस्तु ॥ म नृड विष्णु गदी नका नयथ कि नित्य, सनमा

दिन च ३ नस्था, ॐ नागान् क नृषादि सर्व विना गदः ख सम
ॐ ॐ नि ॥ ॐ नी ह नि ह ना रु कं समा फः ॥ ॐ नमा
रुग व न वा सू द वा य ॥ विष्णु पञ्च न कं दि श्यं सर्व द रु नि
वा न लं, उ शु न आ म हां वी र्यं सर्व ॐ नृ क न न, विष्णु
दक्ष मान कु, बुद्ध ना ॐ ॐ व न क न, न द हं सं प्र व क्षा मी, न्ना म

नकासदारुवन्। यादोनक्रुतु (मविन्द, जह्या या रु।) विक्रमं
उन्त्यां कणवा नक्रु कद्यां वै वजनार्दनं, नाहो रु नृचुर्गन
क्रु गुप्त्र रु वामन रुथा, उदययज्ञनारु च, रु विष्टु च नक्रु
तु वामपान्थान गा विष्टु दक्षिण मधु रुदनं, वाह्यो वासुदव
अहदय चै इ नार्दनं, कणु नक्रु तु वा नार्हं कृष्ण रु स्वमपु

समाधवा कण्ठ्या नक्रु हृषिक मण्ड नाणिक, नलो नावाय
लो नक्रु ललाठ गनूत धर्ज कपात्र कणवा नक्रु वै नगज
नुनक्रु श्री, शावर्चु सर्वगा रु नक्रु म पूरुषा रु म, पूर्व
पुणुली कादं, अ (पुय शा धन रुथा, दक्षिण नाव सिंह चै
नेम त्यां तु दाभादन, पूरुषा रु म वारुं त्यां वाय वां यानवा



महावै. क. सुद वरु. यः प० निरु नित्य स. मरुय
न च दात्रिदं. अधिनि वा न०. विद्या र्थि नरु न विद्या
धनार्थि नरु न धनं. कं न्या र्थि नरु न कं न्या. भा द्यार्थि नरु न
भक्ति. नृपू मा नरु न पू र्ण. नृहार्थि नरु न स्त्रिय. कामार्थी
नरु न कामां. ज स हो हा ग्य दा य कं. सर्व वा र्थे वि निर्म कं.

विष्णु लो कं ॥ ग र्भु ति. नृ नृ गान न क (ग) वि न्दं. ना मा भ्वा न
ग र्भे ष डं न र्थं नि श क ना नू ला गानू स र्थं स र्थं व दा स्य
हं. नृ दि त्य डा प ति वि ष्णु द न्द या ली म हं व न्द य जि र्
गानि स्म य नि लो र्भ व आ धि नी वा न लं ॥ ॥ नृ नृ र्भ क्रा
न वि न चि र्भ यै ज न कं स मा य ॥ ॥ कि न मा ना न

वनं दृष्ट्वा तुलगा काष्ठवद्भिना तज्जुक्तं सर्वं यापयति यथ
न शिदि वीकसां ॥ कलनिय गृध्रवन्दु गुनगा काष्ठपाव
काः द्रुमन तु तिलैकने नृशिष्टा मरुतैरुवन् ॥ यादयानि
न वै धूपं तुलगा काष्ठवद्भिना गणकुतु रुतैर्युग्यं (गागा
न स्य रुतैरुवन् ॥ नैव यश्च यश्च यश्च तुलगा काष्ठवद्भि
ना मेनू तुलैरुवन् दल नदने कं गावा यव ॥ तुलगा पायकने

वदि यश्च कुरु न रुतः दीयन रुतैरु स्य युग्यं रुवति
यथथा ॥ यः पुयश्च निकृष्टार्थं तुलगा काष्ठवन्दु नैन
न सह (गागा लोक वेष्टवैरु विविद्यन ॥ तुलगा मृदुलिफा
गा कुरु न विष्टु पूजनं पूजा रुतदिन नैव लरुनं गान
वार्षिकं ॥ सद्युष्टा तुलगा काष्ठं यादया इति मृदुनि कर्ष
ना गुनक रुतैरु वन्दनं न वनत्तमं ॥ यवा लसूक रुटिके

अथ कांठिरु १० रुद्रा मुलः ॥ मणिनामन गणिग वा द
यं रुद्रं ॥ विलेपानार्थं कृष्णस्य तुलसी काष्ठ खण्डिका मन्दि
नमिष्ठनया वल्कावत्पृथ्व्यरुलः ॥ १२ ॥ निलयस्तु यूनं दत्ता
॥ यत्तुलं वदं दिने नत्तुलं जायते पूर्व्यं सां प्रसादयक
यानिनः ॥ आददाति पितृ तौ तु तुलसी काष्ठ चन्दन पृमि
लां तु रुद्रं न्यीतिः ॥ १३ ॥ इव वषा नोदकं ॥ १४ ॥ मं रुद्रं प० ति ल्य

पुनः कात्र वि० ॥ १५ ॥ मूत्रं सर्वपाथस्या विष्णुलाकं ॥
गर्भं निः ॥ ॥ ॥ निष्ठा नूतयूजा ॥ १६ ॥ पुद्रुद सेहि ना
यां तुलसी काष्ठमाहात्म्यं संपूर्णं ॥ ॥ ॥ नमः ॥ निवाय ॥
वृक्षमूत्रालिसूत्रचिन्तितं निर्मलं वरुणकनशास्त्रिनति
इं जम्भोविदः खविना नानलिङ्गं त्वं प्रणमास्मि सदा नि

